

वर्तमान विश्व की ज़रूरत क्या

अगर पूरे विश्व को एक लाइन में समेटना चाहें तो कह सकते हैं कि सभी आज भयभीत हैं, कोई किसी कारण से, कोई किसी कारण से। कोई मन की अशांति से चिल्ला रहा है, कोई भूख से चिल्ला रहा है, कोई परिवार की समस्या से चिल्ला रहा है, कोई एक-दूसरे से भयभीत होकर चिल्ला रहा है। चिल्लाने का कारण क्या है, शायद ताकत की कमी। यहाँ कोई शारीरिक ताकत की बात नहीं हो रही है, यहाँ पर बात मानसिक ताकत की है जो आज बिल्कुल खो चुकी है।

मनुष्य आज भयभीत है तो कारण उसका सिर्फ ये है कि वो अपने भविष्य को लेकर आश्वस्त नहीं है। और होगा भी कैसे, क्योंकि आज इतनी सारी विकराल समस्याएँ और समस्याओं का समाधान देने वाला कोई नहीं। चाहे हम कितने भी बैंक बैलेंस बना लें, चाहे कितने ही सुख साधन के सामान खरीद लें, फिर भी डर रहे हैं, उलझन में हैं, क्योंकि ये सारे शरीर को आराम देने हेतु हैं, इससे हमारा मन तो अशांत ही रहता है। अगर मनुष्यों के मन की व्यथा को बहुत ध्यान से समझा जाए तो हम कह सकते हैं कि साधन तो हैं, लेकिन वे अल्पकाल के लगते हैं, सम्बंध तो हैं लेकिन उन सम्बंधों में अपनापन नहीं है, सभी अपने आप में जी रहे हैं।

कोई भूख से चिल्ला रहे हैं, कोई मन की अशांति से चिल्ला रहे हैं, कोई टैक्स से चिल्ला रहा है, कोई कुर्सी की हलचल से चिल्ला रहा है, यहाँ तक कि छोटे-छोटे बच्चे भी पढ़ाई के बोझ से चिल्ला रहे हैं। यह चिल्लाना आखिर इतना क्यों है, क्योंकि उनमें कोई भी चीज़ में संतुष्टता नहीं है, सोचते हैं ये भी कर लूं तो शांति, यह प्राप्त कर लूं तो शांति, लेकिन शांति मिल नहीं पा रही है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य ही है कि वो जो कुछ कमा रहा है, या जितने भी काम कर रहा है, उसका सिर्फ एक ही उद्देश्य है कि वो सुख शांति से जीये, लेकिन जी ही नहीं पा रहा है। आज सभी सहारा ढूँढ़ रहे हैं। एक तरह से कहें तो सब कार्य को धक्के से चला रहे हैं। सब बातों में यही सोचते हैं कि ये सब तो चलना ही है। अगर इसको साधरण भाषा में कहें कि जबतक हर कार्य में कोई न कोई साधन का पहिया न लगे तब तक कोई कार्य नहीं चलता। तो

इसका अर्थ तो यही हुआ ना कि कोई चिल्ला रहा है, कोई चला रहा है।

जिस प्रकार आर्टीफिशियल दुनिया में कोई हमें बड़ी चीज़ मिल जाये तो छोटी चीज़ ऑटोमेटिकली छूट जाती है। उदाहरण के लिये यदि आपको एक्सचेंज ऑफर में बाईक के बदले होंडा सिटी कार मिल रही हो तो आप देंगे कि नहीं देंगे, हमारे हिसाब से तो बदल ही लेंगे। वैसे ही अध्यात्म की दुनिया में भी यही सिद्धान्त लागू होता है। मनुष्यों के पास अल्पकाल के बहुत साधन हैं, सुख-सुविधाएँ हैं, उसे वो छोड़ नहीं पा रहा है, उसी में सुख की तलाश कर रहा है। जब उसे वह छोड़ना चाहता है, उसे दर्द होता है, क्योंकि उसे छोड़ने से अटैचमेंट है। अगर कोई चीज़

अपने आप छूट

जाती है तो

हम

कह सकते हैं

कि जब भी कोई दुःख की बात आती है तो हमेशा वो पीछे की होती है, या बीती हुई बात होती है, लेकिन उसे सोचते कब हैं, 'अभी'। उसी प्रकार जिस बात से हमें डर लगता है वो होती है भविष्य की बातें, लेकिन उसको सोचते कब हैं, 'अभी'। अर्थात् वर्तमान में। तो जो कुछ हो रहा है, अभी हो रहा है, चाहे भविष्य का, चाहे भूत का। तो हमें खुश रहना है तो अभी, दुःखी रहना है तो भी अभी, तो हम अभी ही सब क्यों नहीं कर लेते हैं, इंतज़ार क्यों कर रहे हैं, खुश ही रह लो ना। और वो अभी, अभी और अभी।

उस वैराग्य को स्वाभाविक वैराग्य

कहेंगे। अभ्यास और वौराग्य में शायद यही फर्क है कि जितना हम इन चीज़ों को छोड़ने का अभ्यास करेंगे तो वैराग्य स्वतः आ जायेगा, छोड़ना नहीं पड़ेगा, छूट जाएगा।

इसका दूसरा पहलू यह भी है कि छोड़ने हेतु हमें सत्य ज्ञान की आवश्यकता है, समझ की आवश्यकता है और वह समझ यह है कि ये सारे साधन शरीर से सम्बंध रखते हैं, आत्मा को कुछ और चाहिए। और वो कुछ और कुछ नहीं, बस शांति, गहरी शांति, जिससे निकलने का मन नहीं करे। आज बहुत कर लिया सबने दूसरों पर भरोसा, दूसरों पर ऐतबार, मन हल्का करने के लिए दूसरों से बातचीत, लेकिन परिणाम दुःख ही रहा। अभिप्राय यह है कि आज हर आत्मा डिस्चार्ज है, तकलीफ में है, परेशान है, वह खुद ही जब अशांति में है तो दूसरों को कैसे देगी! ये बातें हम अपने अनुभव से

आपको बता रहे हैं कि पहले हमें भी इन बातों का एहसास नहीं था, हम भी शांति व शक्ति दूसरों से लेने की कोशिश करते थे, लेकिन जब परमात्मा ने हमें बताया कि आप खुद एक टॉवर ऑफ पीस और टॉवर ऑफ लव हो तब हमें पता चला कि हम इतने शक्तिशाली हैं और शांति की तलाश कर रहे हैं स्थूल साधनों में। हमारा भविष्य सुनिश्चित करने के लिए और हमको भयमुक्त करने हेतु परमात्मा ने हमको सत्य ज्ञान दिया कि तुम्हारा भविष्य बहुत ही उज्ज्वल। परमात्मा कहते कि यदि आप सुख शांतिमय दुनिया चाहते हो तो सबसे पहले सत्य ज्ञान के आधार से अपने आपको इस शरीर से अलग आत्मा समझो और उसकी तरंगों से, हरेक आत्मा को यह एहसास होगा कि हम भी ऐसा कुछ करें। भविष्य का भय आपको कभी सतायेगा नहीं, क्योंकि वो सुनिश्चित है। वो करना कैसे है, उसका एक उदाहरण निम्नवत है।

आपने एक सैंड वॉच देखी होगी, जिसका उपयोग समय को जानने हेतु पुराने लोग करते थे, जब घड़ियाँ नहीं थीं। कहने का भाव यह है कि उसमें बीच का भाग पतला होता है और ऊपर और नीचे का भाग समान होता है। अगर बालू को ऊपर डाल दिया जाए तो जितनी देर में वो पतली नली से नीचे आता जाता है, धीरे-धीरे जब पूरा ऊपर का भाग खाली हो जाता है तो एक घण्टा पूरा माना जाता है। ये उदाहरण हम आपको इसलिए दे रहे हैं कि यदि ऊपर के भाग को पास्ट मान लिया जाए और नीचे के भाग को फ्यूचर मानें तो बालू के गिरने की प्रक्रिया वर्तमान से ही जा रही है। यदि इसको सामान्य भाषा में समझना चाहें तो हम कह सकते हैं कि जब भी कोई दुःख की बात आती है तो हमेशा वो पीछे की होती है, या बीती हुई बात होती है, लेकिन उसे सोचते कब हैं, 'अभी'। उसी प्रकार जिस बात से हमें डर लगता है वो होती है भविष्य की बातें, लेकिन उसको सोचते कब हैं, 'अभी'। अर्थात् वर्तमान में। तो जो कुछ हो रहा है, अभी हो रहा है, चाहे भविष्य का, चाहे भूत का। तो हमें खुश रहना है तो अभी, दुःखी रहना है तो भी अभी, तो हम अभी ही सब क्यों नहीं कर लेते हैं, इंतज़ार क्यों कर रहे हैं, खुश ही रह लो ना। और वो अभी, अभी और अभी।



देहरादून। उत्तराखंड के राज्यपाल डॉ. के.के. पॉल को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. मंजू व ब्र.कु. मीना।



भुवनेश्वर-ओडिशा। डॉ. रवि नारायण सेनापति, ओडिशा स्टेट इलेक्शन कमिश्नर को ईश्वरीय संदेश देने के बाद चित्र में ब्र.कु. इंदु, ब्र.कु. देबस्मिता, ब्र.कु. बिजय व ब्र.कु. प्रफुल्ला।



कलायत-हरियाणा। एस.डी.एम. राजकुमार सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. दीपक, माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. रेखा।



जम्मू कश्मीर-उधमपुर। डिप्युटी कमिश्नर के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. अशोक व ब्र.कु. दिया।



बख्तियारपुर-बिहार। कृष्णाकांत उच्च विद्यालय, लखनपुर में 'व्यसनमुक्त जीवन' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. मृदुल, प्रिन्सीपल मुरलीधर जी, शिक्षकगण व विद्यार्थीगण।



भीलवाड़ा-राज.। ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित स्नेह मिलन व आध्यात्मिक स्नेह संध्या में उपस्थित हैं बायें से ब्र.कु. इंद्रा, बी.जे.पी.के जिलाध्यक्ष दामोदर अग्रवाल, पार्षद मोहम्मद हफीज़, सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. तारा, पार्षद मंजू पोखरना व ब्र.कु. तरुणा।



हरदुआगांज-उ.प्र.। प्रजापिता ब्रह्मा के स्मृति दिवस पर बाबा के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए नगरपालिका चेयरमैन राजेश यादव व उद्योगपति सुरेश जैन। साथ हैं ब्र.कु. कमलेश, सत्यप्रकाश भाई व भारत भूषण जी।



कानपुर-किदवई नगर(उ.प्र.)। आयुध निर्माण संस्थान में ट्रेनी ऑफिसर्स को आंतरिक स्वच्छता विषय पर बताने के पश्चात् ट्रेनी ऑफिसर्स के साथ समूह चित्र में ब्र.कु. दुलारी, ब्र.कु. शशि एवं ब्र.कु. निधि।